भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

प्रेस वक्तव्य

दिनांक–14 अप्रैल, 2022

दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी की सचिवालय सदस्या, दंडकारण्य के क्रांतिकारी महिला आंदोलन की आदर्श नेत्री कॉमरेड् नर्मदा दी (उप्पुगंटि निर्मला) को लाल-लाल सलाम्!

कॉमरेड् नर्मदा दी की स्मृति में 25 अप्रैल को दंडकारण्य बंद सफल बनावें!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी की सचिवालय सदस्या, दंडकारण्य के क्रांतिकारी महिला आंदोलन की नेत्री, 1980 से 2022 के बीच के 42 साल तक क्रांतिकारी आंदोलन में समर्पित भावना के साथ काम करने वाली, पिछले 4 सालों से कैंसर से पीड़ित व पिछले 2 साल 10 महीनों से मुंबई के बाइकुल्ला जेल में बंद कॉमरेड् नर्मदा दी (उप्पुगंटि निर्मला) 9 अप्रैल की सुबह 11.30 बजे को बांद्रा स्थित एक हास्पाइस में शहीद हुईं. अमर शहीद कॉमरेड् नर्मदा दी को दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सिर झुकाकर विनम्रतापूर्वक श्रद्धसुमन अर्पित करती है और लाल–लाल सलाम् पेश करती है. उनकी क्रांतिकारी स्फूर्ति को आत्मसात करते हुए उनके अधूरे आशयों की पूर्ति के लिए आंदोलन की राह में अडिग होकर आगे बढ़ने तमाम पार्टी कतारों, पीएलजीए बलों, क्रांतिकारी जन कमेटियों व जन संगठनों तथा क्रांतिकारी जनता का आह्वान करती है. उनके जीवनसाथी एवं वर्तमान में मुंबई के आर्थर रोड़ जेल में बंद कॉमरेड् किरण दा (रानि सत्यनारायण), आंदोलन में उनके साथ काम किए साथी कॉमरेडों, उनके परिजनों, बंधु–मित्रों के प्रति गहरी संवेदना और प्रगाढ़ सहानुभूति प्रकट करती है. उनकी स्मृति में, उनके क्रांतिकारी योगदान को ऊंचा उठाते हुए आगामी 25 अप्रैल को दंडकारण्य बंद का पालन करने डीके एसजडसी जनता, जनवादियों, प्रगतिशील ताकतों का आह्वान करती है.

कॉमरेड् नर्मदा दी का जन्म 1960 में आंध्रप्रदेश राज्य के कृष्णा जिले के गन्नवरम के नजदीकी कोंडापावुलूरु गांव में हुआ था. उनके पिता कम्युनिस्ट पार्टी के हमदर्द थे और बचपन से ही वे नर्मदा दी को प्रगतिशील विचारों से लैस किया था. ग्रामीण परिवेश में उनकी 10वीं तक पढ़ाई पूरी हुई. उसके बाद वे दक्षिण भारतीय हिंदी प्रचार सभा द्वारा आयोजित की जाने वाली 'विशारदा' से लेकर एमए के समकक्ष 'साहित्य रत्न' परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुई थीं. इस तरह हासिल हिंदी भाषा ज्ञान का उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन के कई जरूरतों को पूरा करने के लिए बखूबी उपयोग किया था. चूंकि उनके पिता तत्कालीन पार्टी के नेताओं के संपर्क में थे, इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन का प्रभाव कॉमरेड् निर्मला पर भी स्वाभाविक रूप से पड़ा. 1980 से वे क्रांतिकारी गतिविधियों में शामिल होते हुए आंदोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनी थीं. तब से लेकर शहादत तक उनका क्रांतिकारी प्रस्थान जारी रहा. इन 42 सालों में उन्होंने पार्टी एवं क्रांतिकारी आंदोलन के सामने उत्पन्न तमाम उतार–चढ़ावों, मोड़–घुमावों में मजबूती से डटी रही.

तत्कालीन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी–लेनिनवादी) (पीपुल्सवार) की आंध्रप्रदेश कमेटी के मुखपत्र 'क्रांति' एवं 'क्रांति प्रकाशन' की प्रकाशकीय तथा प्रिंटिंग जिम्मेदारी निभाने वाले कॉमरेड् किरण दा के साथ 1983 में कॉमरेड् नर्मदा का विवाह हुआ था. उसके बाद से 1986–87 तक वे क्रांति प्रकाशन के स्टाफ के तौर पर काम किया. तभी विकसित होते दंडकारण्य के क्रांतिकारी आंदोलन की जरूरतों के मद्देनजर पार्टी ने प्रभात पत्रिका के प्राकशन का निर्णय लिया था. उस निर्णय के तहत 1988 से कॉमरेड् नर्मदा दी प्रभात पत्रिका के संपादक मंडल का हिस्सा बनी थी. आंध्रप्रदेश के बाहर कई शहरों में रहते हुए उन्होंने यह जिम्मेदारी 1996 तक निभायी.

उसके बाद जनता के बीच में क्रांतिकारी आंदोलन में प्रत्यक्ष तौर पर काम करने की अपनी मांग व मजबूत इरादे को पार्टी के सामने रखकर कॉमरेड् नर्मदा दी 1996 से दंडकारण्य के गडचिरोली आंदोलन का हिस्सा बन गयीं. तब से लेकर 22 साल वे दंडकारण्य खासकर गडचिरोली जनता के बीच क्रांतिकारी आंदोलन का निर्माण करती रहीं. वे जनता के साथ इस कदर घुलमिल जाती थीं कि गडचिरोली के गट्टा–भामरागढ़, पेरमिलि इलाकों के गांव–गांव, घर–घर के लोगों से उनकी नजदीकी थी. उनका क्रांतिकारी व्यवहार गडचिरोली के क्रांतिकारी आंदोलन का अभिन्न अंग बन गया था. आंदोलन में सीढ़ी–दर–सीढ़ी विकसित होते हुए कॉमरेड् नर्मदा दी 2003 में आयोजित दंडकारण्य स्पेशल जोन प्लीनम में वैकल्पिक एसजडसी सदस्य चुनी गयी थीं. उसके बाद एसजडसी सदस्य बन गयी थीं. उसी दौरान वे क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन की अध्यक्ष बनी. इन जिम्मेदारियों का निर्वाह करते हुए कॉमरेड् नर्मदा दी ने पार्टी के तत्कालीन केंद्रीय कार्यभार 'दंडकारण्य एवं बिहार–झारखंड को आधार इलाका बनाने के लक्ष्य के साथ पीएलजीए को पीएलए में, छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में तब्दील करें' को गडचिरोली में अमल करने के तहत छापामार आधारों के निर्माण के लिए विशेष प्रयास किया. तत्कालीन गडचिरोली डिविजनल कमेटी सचिव कॉमरेड् विकास के साथ मिलकर गट्टा–भामरागढ़ में वर्ग विश्लेषण कर 2005 से क्रांतिकारी जन कमेटियों के निर्माण पर ध्यान केंद्रित किया.

कॉमरेड् नर्मदा दी एसजडसी सदस्या की हैसियत से एवं केएएमएस अध्यक्ष रहते हुए दंडकारण्य में क्रांतिकारी महिला आंदोलन को मजबूत करने के साथ–साथ, जन राज्यसत्ता को मजबूत करने तथा उसमें महिलाओं की नेतृत्वकारी भूमिका को बढ़ाने की लगातार कोशिश करती रही. खासकर गडचिरोली डिविजन में जन राज्यसत्ता के संगठनों – जनताना सरकारों के विकास में उनका अहम् योगदान रहा. 2006 में जब गडचिरोली आंदोलन उत्तर एवं दक्षिण गडचिरोली दो डिविजनों में विकसित हुआ था, तब कॉमरेड् नर्मदा दी दक्षिण गडचिरोली पर एवं शहीद कॉमरेड् श्रीकांत उत्तर पर केंद्रीकरण करते हुए गडचिरोली आंदोलन को एक सब जोन स्तर के आंदोलन में विकसित करने में अपना–अपना योगदान दिए थे. उस दौरान पीएलजीए, जनताना सरकार काफी मजबूत हुए और आंदोलन ने अच्छी सफलताएं हासिल की. भर्ती में भी बढ़ोत्तरी थी.

केएएमएस की जोन अध्यक्ष के तौर पर संगठन की बैठकों, अधिवेशनों के संचालन के जरिए महिलाओं में क्रांतिकारी चेतना बढ़ाने में कॉमरेड् नर्मदा की महत्वपूर्ण भूमिका रही. वे दंडकारण्य महिला सब कमेटी की इंचार्ज रहीं. पुरुष प्रधान समाज में पितृसत्तात्मक विचारधारा के खिलाफ एवं उसे खत्म करने की दिशा में भरसक कोशिश की. महिला कॉमरेडों के सामने मौजूद समस्याओं का अध्ययन एवं उनके हल के लिए वो एसजडसी में चर्चाकर आवश्यक निर्णय लेने में अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह किया. 2009 में दंडकारण्य के 30 साल के क्रांतिकारी महिला आंदोलन के इतिहास को लिपिबद्ध करने में उनका भी योगदान रहा. उक्त किताब का संक्षिप्त हिंदी रूपांतरण में भी उनकी भूमिका रही. वे दंडकारण्य के जन संगठनों की सब कमेटी सुकोमो सदस्य रहकर बदलती परिस्थितियों के अनुरूप क्रांतिकारी जन संगठनों के संविधान व घोषण पत्रों में समय–समय पर आवश्यक बदलाव करने में सक्रिय तौर पर शामिल रहीं.

पत्रिका प्रकाशन में पहले से अनुभव हासिल कॉमरेड् नर्मदा दी प्रभात के बाद 1996 से प्रारंभ केएएमएस के मुखपत्र 'संघर्षरत महिला' जो पहले तेलुगु भाषा में फिर हिंदी में प्रकाशित होता आया है, के संचालन में उनका बेमिसाल भूमिका रही. उसी तरह 2001 से स्थानीय कोया भाषा में प्रारंभ गडचिरोली डिविजन पत्रिका 'पोडदु' के नामकरण से लेकर 2018 तक उसके 25 से भी ज्यादा अंक प्रकाशित करने में, उस पत्रिका के विकास पथ के हर अक्षर पर उनकी छाप है.

आंदोलन की हर मोड़, हर बदलाव, विकास की हर अवस्था, जन संघर्षों, जन चेतना को लिपिबद्ध कर रिकॉर्ड् रखने में कॉमरेड् नर्मदा दीदी बेमिसाल है. 2009 में बंगाली जनता की जीवन परिस्थितियों, 2012 में पेसा एवं ग्रामसभाओं (लेखामेंडा) के कामकाज का अध्ययन कर एसजडसी के लिए रिपोर्ट् तैयार की थी. फिर एसी, डीवीसी कॉमरेडों के साथ रहकर 2015–16 में गट्टा–भामरागढ़ एरियाओं की परिस्थितियों में आए बदलावों खासकर जारेवाडा, गोरगुट्टा पंचायतों में वर्ग विश्लेषण की रिपोर्ट् तैयार की थी. इस तरह की सभी डिविजनों की रिपोर्टों के आधार पर डीके में बदलती परिस्थितियों के मुताबिक एसजडसी द्वारा नए दांव–पेंच बनाए गए थे.

अक्टूबर, 2011 में आयोजित दंडकारण्य चौथे अधिवेशन की पहली प्लीनम ने यह आकलन लगाया था कि दंडकारण्य आंदोलन कठिन परिस्थिति मं पहुंच गया है. उस स्थिति से निपटने 2013 में पार्टी ने बोल्शेवीकरण अभियान अपनाया था. पश्चिम सब जोन में इस अभियान को संचालित करने में कॉमरेड् नर्मदा दी ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभायी.

2013–14 में गडचिरोली आंदोलन को गंभीर नुकसान पहुंचे थे. गोविंदगांव से लेकर रामन–मेंड्री तक की मुठभेड़ों में 29 कॉमरेड्स शहीद हुए थे. दुश्मन के इस प्रचार कि अब गडचिरोली आंदोलन खत्म हो गया है, को एक चुनौती के रूप में लेकर पार्टी द्वारा अपनाए गए नए दांव–पेंचों पर अमल करते हुए बांस कटाई मजदूर संघर्ष समितियों को मजबूत करने, और भी कानूनी संघर्षों के संचालन में, उन संघर्षों में जनता को गोलबंद करने में वो अविराम मेहनत करती रही.

डीके आंदोलन की कठिन परिस्थितियों के बीच में ही 2015 में वे डीके एसजडसी सचिवालय सदस्य चुनी गयी थी और पश्चिम सब जोनल ब्यूरो की इंचार्ज बनी. वे सैनिक कार्रवाइयों में प्रत्यक्ष रूप से शामिल होते हुए 2014 से 2017 के बीच टीसीओसियों का नेतृत्व किया था जो सफल, आंशिक सफल हुए थे.

पेसा कानून का उपयोग करते हुए जब गडचिरोली डिविजन की जनता ग्राम सभाओं का गठन करते हुए अपने अधिकारों के लिए कानूनी संघर्ष करने लगी थी, तब कॉमरेड् नर्मदा दी ने पार्टी की ओर से उन्हें भरपूर समर्थन घोषित किया था. वे युवाओं व छात्रों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हुए उन्हें संगठित करने का प्रयास किया. सुरजागढ़, दमकोडीवाही खदानों को बचाने एवं अपने विस्थापन के खिलाफ लोगों को जन आंदोलनों में लामबंद करने में उनका योगदान काफी रहा.

2013 के नुकसानों से बाहर आकर आंदोलन के आगे बढ़ने के दौरान ही 2018 अप्रैल 22 को कसनूर मुठभेड़ में असाधारण नुकसान पहुंचा जिसमें 40 कॉमरेड शहीद हुए थे. तब तक कॉमरेड् नर्मदा दी की तबीयत खराब होने लगी थी. फिर भी अपनी अस्वस्थता की परवाह किए बगैर वे कैडरों व जनता के साथ दृढ़तापूर्वक डटे रहकर नुकसान से बाहर आने, आंदोलन को फिर से आगे ले जाने हेतु योजना तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया.

कॉमरेड् नर्मदा एक रचनाकर, कवि, कहानीकार थी. वह दंडकारण्य के लेखकों में शुमार थी. हालांकि क्रांतिकारी आंदोलन में प्रत्यक्ष जिम्मेदारी निभाने के चलते उन्हें विस्तृत पैमाने पर साहित्य सृजन करने पर्याप्त समय नहीं मिला लेकिन ग्रामीण जन जीवन, खासकर क्रांतिकारी आंदोलन में आदिवासी महिलाओं, बच्चों के योगदान, उनकी समस्याओं को लेकर कहानियां, लेख, कविताएं लिखी.

अगस्त 2018 में उन्हें इलाज के लिए हैदराबाद भेजा गया. इलाज के दौरान ही उन्हें और उनके जीवनसाथी कॉमरेड् किरण (रानि सत्यनारायण) को तेलंगाना एसआइबी और महाराष्ट्र पुलिस ने 11 जून, 2019 को गिरफ्तार किया और 65 झूठे मुकदमों में फंसाकर मुंबई के बाइकुल्ला जेल में बंद किया. कोरोना का बहाना कर उपयुक्त चिकित्सा भी उपलब्ध नहीं कराया गया था. पुलिस एवं जेल अधिकारियों की जानबूझकर बरती गयी लापरवाही के चलते उनकी बीमारी और गंभीर हो गयी. स्तर कैंसर ने क्रमशः कई अन्य अंगों को अपनी चपेट में लिया. इस कदर जानलेवा बीमारी के बावजूद कॉमरेड् नर्मदा दी जेल में आखिरी वक्त तक भी बाकी बंदियों के लिए प्रेरणादयक व स्फूर्ति प्रदाता के तौर पर रहीं. उन्हें भेजी गयी पत्रिकाओं व पुस्तकों को पढ़ती रहीं.

डॉक्टरों की रिपोर्ट् पर आधारित होकर हाइकोर्ट् ने सितंबर, 2021 में आदेश दिया था कि किसी हॉस्पाइस (लाइलाज स्थिति में आखिरी समय बिताने का आश्रय स्थल) में उनकी भर्ती की जाए. इस पर भी काफी देरी से उन्हें बांद्रा के हास्पाइस में भर्ती किया गया था जहां उनका निधन 9 अप्रैल को हुआ. कॉमरेड् किरण दा को अपनी जीवनसाथी को देखने हाईकोर्ट् के आदेश के बावजूद क्रूर पुलिस अधिकारियों ने मौका नहीं दिया. उन्हें कॉमरेड् नर्मदा दी की शहादत के आधे घंटे बाद ही वहां ले गए. यह है, हिंदुत्व फासीवादी सरकार और उसके राज्ययंत्र के कलपुर्जे पुलिस, जेल प्रशासन का रवैया जिसकी कड़ी भर्त्सना करने हम जनवादियों, मानवाधिकार संगठनों से अपील करते हैं.

कॉमरेड् नर्मदा दी अपने आशय एवं आदर्श क्रांतिकारी जीवन के साथ दंडकारण्य एवं देश की उत्पीड़ित जनता विशेषकर उत्पीड़ित महिलाओं के लिए भोर का तारा बनकर क्रांतिकारी राह दिखाती रहेंगी. उनकी बोल्शेविक स्फूर्ति को आत्मसात करते हुए, क्रांतिकारी जीवन में उनके द्वारा स्थापित आदर्शों व उच्च कम्युनिस्ट मूल्यों पर अमल करते हुए वर्ग संघर्ष–जनयुद्ध में आखिरी तक डटे रहते हुए उन्हें सही मायने में श्रद्धासुमन अर्पित करेंगे.

आदर्श क्रांतिकारी महिला नेत्री कॉमरेड् नर्मदा दी की अमर स्मृति में आगामी 25 अप्रैल को दंडकारण्य बंद सफल बनाने समस्त जनता, जनवादियों से हम अपील करते हैं.

(विकल्प)
प्रवक्ता
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)